तबला के नवीन घरानों के निर्माण न होने मे भूमण्डलीकरण की भूमिका

लाल बाबू निराला
असि0 प्रोफेसर, संगीत विभाग
चौ0 चरण सिंह
पी0जी0 कॉलेज (इटावा)

तबला के नये घरानें के निर्माण न होने में भूमण्डलीकरण की भूमिका इस सम्बन्ध में तबला के इतिहास व घरानों के निर्माण का समय काल व संस्थापाक का विष्लेशण करते हैः–

दिल्ली घराना– सिद्धार खां– (1700 ई0 के आस–पास)

लखनऊ घराना– मोदू खां– (1750 ई0 के आस–पास)

अजराड़ा घराना– मीरू खां, कल्लू खां (1780 ई0 के आस–पास)

फर्रूखाबाद घराना– हाजी विलाय अली (1800 ई0 के आस–पास)

बनारस घराना– पं. रामसहाय सिंह (1820 ई0 के आस–पास)

पंजाब घराना– लाला भवानीदास (1700–1710 ई0 के आस–पास)

घरानों के समय काल का अवलोकन करने पर हम पाते है कि 1700 ई0 मे घरानों का नींव पड़ गया और घरानों का विकास होने लगा। 1700 ई0 से घरानों का विकास प्रारम्भ होकर 1820 ई0 तक तबले मुख्य छः घरानों की स्थापना हो गयी और लगभग 1850 ई0 तक तबले सभी छः घराने प्रचलन मे आ गये। इसके उपरांत वर्तमान समय 2020 ई0 तक कोई नया घराना नहीं बना है। इस समय काल को हम दो भाग में बॉट कर विश्लेषण कर सकते है।

पहला– 1700 ई0 से 1850 ई0 तक का समय काल जिसमें तबला के सभी छः घरानें स्थापित हो गये।

दूसरा– 1850 ई0 से 2020 ई0 वर्तमान काल जिसमें 1850 ई0 के बाद कोई नया घराना नही स्थापित हुआ।

इस प्रकार लगभग 320 वर्ष के समय में प्रथम 150 वर्ष में छः घरानें स्थापित हुये तथा दूसरे 170 वर्ष मे कोई नया घराना नही बन पाया। प्रथम 150 वर्ष, 1700 ई0 से 1850 ई0 तक के समय काल में वैज्ञानिक साधन बिल्कुल नही थे। यातायात के लिए साइकिल तक नही थी और अन्य साधन भी नही थे अर्थात इस समय काल में वैज्ञानिक साधन बिलकुल नही थे। अतः जनमानस तक संगीत का विस्तार भी सीमित था। उस परिस्थिति मे तबला के घरानें विकसित हुए। 1850 ई0 के बाद समाज में और मानव उपयोग में वैज्ञानिक साधन का आगमन प्रारम्भ हो गया। इन साधनों के माध्यम से तबला वादक जो भिन्न–भिन्न क्षेत्रों मे स्थापित थे। इससे कलाकार व कला में एक दूसरे से ब्यापक रुप में कला के माध्यम से जुड़ाव बढता गया । इस रुप से जुड़ते गये कि दिल्ली के तबला को लखनऊ वाले सुन सकते है। दिल्ली के पंजाब, पंजाब के बनारस, वाले तबला को सुन सकते है अर्थात सभी घरानों के तबला वादक किसी भी स्थान मे किसी भी परिवे ा में हो वह एक दूसरे के तबला वादन को सुन व देख सकते हैं। इससे तबला वादक अपने घरानें के परिधि से निकलने लगा और कलाकार एक दूसरे के वादन को अनुकरण कर अपने तबला को और समृद्ध करने लगा। इससे नये घरानों की स्थापना के लिए जो कुछ बातें होना बहुत जरूरी है –जिसमें पहला नया घराना स्थापना के लिए उसका वादन भौली नई होनी चाहिए जो किसी घरानें में न हो। उसके साथ–साथ उसके वादन में नवीन बंदि ों का समावे ा हो और उसके उपरांत इन वि ोशताओं को अपने वादन में प्रयोग कर कम से कम सफल तीन पीढ़ी–दर–पीढ़ी पूरे जन समाज मे सफल अनवरत रुप से प्रसार किया जाए। तब उसके बाद उसे सामाजिक व सांगीतिक रुप से घराने की मान्यता मिलती है। जो 1850 ई0 के बाद नही हुआ। तबला वादक अपने वादन को समृद्धि में एक दूसरे घरानें को अनुकरण करने लगे। 1850 ई0 के बाद धीरे–धीरे वैज्ञानिक साधन प्रयोग होने लगे। 1900 ई0 और इसके बाद दूरद ंन, रेडियो, कम्प्यूटर, इण्टरनेट आदि आगमान प्रारंभ होने लगे। इससे एक दूसरे के तबला देखने सुनने की व्यवस्था सहज होता गया । इससे तबला वादक नई वादन भौली के विकास व घरानों की परिधि में न रहकर सभी घरानों की खूबसूरती को अपनाने और वादन को समृद्ध करने की तरफ ज्यादा ध्यान देने के साथ अपने साधन और बौद्धिक क्षमता का प्रयोग करने लगे। इससे घरानें की परिधि तो कम हुई ही साथ में नये घरानों के निर्माण की सम्भावना भी कम होती गयी।

यहां एक बात का उल्लेख करना आव यक है कि कुछ कलाकारों ने नया घराना बनाने की कोि ा जरुर की जैसे–उस्ताद चूड़ियों वाले इमाम बक ा ने भटोला घराना, अमीर हुसैन खांन ने बम्बई घराना और अहमद जान थिरकवा साहब ने मुरादाबाद घराना बनाने की कोि ा ा की पर मान्यता नहीं मिली क्योंकि इसमे कोई नई बात नही कही गयी और अगली तीन

पीढ़ियां इसके सफल संवहक नही हुई। कई तबला वादक परंम्पर जैसे –मथुरा, बिहार दरभंगा परम्परा आदि में कई तबला वादक हुये वह परम्परा तक सीमित रह गये। घरानें के रुप मे मान्यता नही मिल पाई अन्ततः कोई नया घराना नही बना।

घरानों का जब विकास हुआ उस समय तबला की सामाजिक परिस्थिति यह थी की उस समय संगीत का राज दरबार में आश्रय प्राप्त था। तबला वादक सिर्फ अपने तबला और साधना पर ध्यान देते थे। उन्हें जीवन यापन के सभी साधन राजदरबार से उपलब्ध कराये जाते थे। यह परिस्थिति समय के साथ बदलती गयी और राज दरबार भी समाप्त होते गये अर्थात जिन परिस्थितियों मे घरानें विकसित हुए वह परिस्थिति समय के साथ बदल गई। वैज्ञानिक साधन के आगम से परिस्थिति और तेजी से बदलता गया। जिस परिस्थिति मे घरानों का निर्माण हुआ वह परिस्थिति धीरे धीरे समाप्त हो गयी, जिससे नये घरानें नही बन सके। यह भी एक कारण रहा है । कुछ विद्वान यह मानते है कि अगर जिस परिस्थिति मे घरानों का जन्म हुआ वह स्थिति, परिस्थिति वर्तमान मे आ जाये तो नये घरानें बन सकते है परन्तु यह असम्भव है। अतः नये घरानों के निर्माण की सम्भावना भी कम हो जाती है। एक तथ्य यह भी प्राप्त होता है कि छः घरानों का विकास जैसे–जैसे हुआ उसके साथ–साथ तबला वादन में वादन ैली का विकास व बंदि ा की नवीनता जुड़ती गयी। जैसे दिल्ली किनार का बाज है, लखनऊ मे खुला हो गया, अजराड़ा में अनामि का प्रयोग आदि सीभी घरानों की वि ोषता तबला वादन मे जुड़ता हुआ, बनारस तक पहुंचा। यहां तक पहुंच कर तबला इतना समृद्ध हो गया कि तबला गायन, वादन व नृत्य के संगत मे पूर्ण उपयुक्त होने के साथ–साथ स्वतन्त्र वादन मे भी बहुत विस्तार हो गया । इस प्रकार छः घरानें बनने तक तबला में वादन ैली के विकास की जो सम्भावना थी वो लगभग पूर्ण हो गयी। अतः इसमे नये वादन भौली को विकसित करने की सम्भावना बहुत कम हो जाती है। जो नये घरानों की स्थापना के लिए आव यक होता है। इससे भी नये घरानों के बनने की सम्भावना बहुत कम हो जाती है। इसके साथ–साथ वैज्ञानिक साधन भूमण्डलीकरण ने प्रभाव डाल दिया कि हर तबला वादक एक दूसरे को सुन देख सकता है, इससे एक दूसरे के अनुसरण करने का क्षेत्र बढ गया। इससे तबला वादक सभी घरानें के वादन ैली, उसकी खूबसूरती, बंदि ा, तैयारी, लय–लयकारी इत्यादि सभी को अपने वादन में समाहित करने के लिए अपनी साधना, बौद्धिक क्षमता का प्रयोग करने लगे। इससे नये घरानों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में उसकी कोि ा ों नाम मात्र की रह जाती है अर्थात नही के बराबर होता है। इसलिए भी नये घरानों का अविष्कार नही हो पा रहा है।

भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में देखे तो यह निष्कर्ष निकलता है कि जिस परिस्थिति मे घरानों का निर्माण हुआ, उस परिस्थिति को बदलनें मे सबसे अहम भूमिका भूमण्डलीकरण व भूमण्डलीकरण के कारक वैज्ञानिक साधन का रहा है। इससे वह परिस्थिति बदली, परिस्थिति बदलने से नये घरानों की उत्पत्ति की सम्भावना भी कम हो गयी। भूमण्डलीकरण ने तबला के नये घरानों की उत्पति की सम्भावना को कम किया है। इसके साथ–साथ घरानें की परिधि को भी कम किया है। वर्तमान भूमण्डलीकरण युग में कोई तबलावादक अपने घरानें तक सीमित नही रहना चाहता है। वर्तमान दिल्ली, अजराड़ा घरानें मे खुले बाज का प्रयोग हो रहा है। बनारस का तबला वादक दूसरे घरानें की बंदि ों को बजा रहे है। यह भूमण्डलीकरण का तबला वादन पर प्रभाव का प्रमाण है। वर्तमान सुविख्यात तबला वादक जाकिर हुसैन जी इस बात को सहज रुप से खुले मंच पर यह स्वीकारते है कि मैने तबला की तालिम अव य अपने पिता जी से पंजाब घरानें की ली है– लेकिन मैं यह नही कह सकता कि सिर्फ पंजाब घराना ही बजाता हूं। हां मेरी तामिल जरुर पंजाब से हुई है लेकिन मेरे तबला वादन में दूसरे घरानें का वादन भी होता है। इससे यह साबित होता है कि वर्तमान समय मे सभी घरानों पर एक दूसरे का प्रभाव है। यह अनुसरण का ही परिणाम है। इससे तबला वादन घरानों की परिधि से निकल कर वैि वक रुप में विकास हुआ। तबले के विकास की यह दि ा घरानें की परिधि को सीमीत तो कर ही रही है साथ ही नये घरानें की उत्पत्ति की सम्भावनाओं को भी समाप्त कर रही है। जब तबला वादक अन्तराष्ट्रीय स्तर पर तबला वादन कर रहा है तथा इसको विकसित कर रहा है, इससे घरानें के निर्माण की प्रक्रिया बहुत पीछे छुट जाती और नये घरानें नही बन पाते।

घरानों के नाम किसी न किसी जगह के नाम पर रखा गया है, दिल्ली, लखनऊ, फर्रूखाबाद, अजराड़ा, बनारस, पंजाब यह सभी जगह के नाम है। इसी जगह के नाम पर घरानों का नाम रखा गया है। कारण यह रहा कि उस समय अपने–अपने क्षेत्र का महत्व बहुत होता था कलाकार के कला का क्षेत्र सीमित था तथा उस जगह का उसके कला पर प्रभाव भी दिखता था। वादन मे कोई नई बात होती थी तो उसे उस क्षेत्र के नाम से बने घरानें की वि ोषता बता कर प्रसारित किया गया । अर्थात जब घरानों का निर्माण हुआ उस समय किसी क्षेत्र का महत्व बहुत होता था कि यह तबला वादक उस जगह का है और तबला वादक भी जगह के नाम को प्रसारित करने मे बहुत महत्व देते थे। वर्तमान में किसी क्षेत्र की सीमा का दायरा वैि वक रुप से ले चुका है। अतः कला को वैि वक रुप में ध्यान रखकर कार्य हो रहा है। अतः घरानों की उत्पत्ति का जो परिवे ा रहा वो परिवे ा बिलकुल बदलता गया। अतः इन कारणों व परिवर्तन से 1850 ई0 के बाद कोई नया तबला घराना नही स्थापित हो पाया और भविश्य मे इसकी उत्पत्ति की सम्भावना भी बहुत कम दिखती है।

ग्रन्थानुक्रमणिका

पुस्तक का नाम **लेखक**

1. भारतीय ताल वाद्य पं. लालमणि मिश्र
2 भारतीय तालों का भाास्त्रीय विवेचना डॉ. अरुण कुमार सेन
3 तबला एवं पखावज के घरानों का वि लेषणात्मक अध्ययन डॉ. आबान–ई–मिस्त्री
4 ताल वाद्या भाास्त्र भालचंद्र मराठे
5 बुन्देलखंड के संगीत में अवनद्व वाद्य (एक अध्ययन) डॉ. नागे ा कुमार त्रिपाठी
6 तबला पुराण पं. विजय ांकर मिश्र
7 हिन्दुस्तानी संगीत भाास्त्र भगवत भारण भार्मा
8 तबले की विस्तार ाील बंदि ो पे ाकारए रेला और कायदा डॉ. जे.पी. पटेल
9. ताल प्रकाश, भगवत शरण भार्मा
10. आदिवासी संगीत, डॉ0 हीरालाल शुक्ल
11 मृदंग तबला प्रभाकर, राम शंकर दास
12. नाट्य शास्त्र (हिन्दी व्याख्या) बाबू लाल शुक्ला
13. निबन्ध संगीत, लक्ष्मी नारायण गर्ग
14. संगीतराज, डॉ0 प्रेमलता शर्मा
15. हमारे संगीत रत्न, हरिवंश पुराण
16. तबले पर दिल्ली और पूरब, सत्यनारायण वशिष्ठ
17. जूनियर रिसर्च फेलोशिप एवं लेक्चरशिप पात्रता हेतु संगीत, 2000